RESEARCH EXPRESSION ISSN 2456-3455 Vol. 1, Issue 1, September 2016

छत्तीसगढ़ में पर्यटन की प्रसम्भाव्यता

सुषमा यादव[a*], गौरी वर्मा[b]

a. भूगोल विभाग, शा. विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

b. भूगोल विभाग, इंदिरा गाँधी शासकीय महाविद्यालय, वैशालीनगर, भिलाई (छ.ग.)

सारांश

यद्यपि राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन मानचित्रों में छत्तीसगढ़ को विशिष्ट स्थान नही मिल पाया है तथापि यहां पर ऐतिहासिक, पुरातात्विक, पौराणिक, धार्मिक वन्य जीवन अभ्यारण्य एवं प्राकृतिक सौंदर्य के अद्वितीय उदाहरण एक साथ विद्यमान है। छत्तीसगढ़ की पहचान अध्यात्म, पुरातत्व तथा प्राकृतिक सौंदर्य के रूप में है।

बीज शब्दः प्रादुर्भाव, देशादन, अभ्यारण, पुरातात्विक, अभ्यारण, ऐतिहासिक

भूमिका

मानव सभ्यता के इतिहास का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि मानव उत्पत्ति के साथ ही अपनी भोजन जैसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकता था, जब आवास स्थायी होने लगा तो एक स्थान से दूसरे स्थान वस्तु विनिमय करने लगा, तत्पश्चात् व्यापार हेतु देशाटन प्रारंभ हुआ। कृषि सभ्यता के प्रादुर्भाव से मानव ने सथायी जीवन यापन प्रारंभ किया, चूँकि मानव का मन चंचल होता है, इसलिए एक जैसे क्रिया–कलाप से तंग आकर मानव पर्यटन करना चाहता है। पर्यटन किसी भी क्षेत्र के इतिहास, सभ्यता, संस्कृति से परिचित होने का सशक्त माध्यम होता है। विश्व स्तर पर भारत की पहचान अध्यात्म, पुरातत्व तथा प्राकृतिक सौंदर्य के रूप में है। भारत विदेशी पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र है।

अध्ययन क्षेत्र

छत्तीसगढ़, भारत का हृदय स्थल, मध्यप्रदेश का पूर्वी क्षेत्र 01 नवम्बर 2000 को भारत के 26 वें राज्य के रूप में उदित हुआ (विस्तार 17°46′–24°06′ उत्तरी अक्षांश तथा 80°15′–84°24′ पूर्वी देशांश के मध्य)। छत्तीसगढ़ का क्षेत्रफल 135191 वर्ग कि. मी. तथा जनसंख्या लगभग 2.55 करोड (जनगणना 2011) है।

अध्ययन का उद्देश्य

क. छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक, धार्मिक, एवं स्वास्थ्यवर्धक स्थलों की पहचान करना,

ख. छत्तीसगढ़ में पर्यटन स्थलों की प्रसम्भाव्यता का आंकलन करना।

ग. छत्तीसगढ़ को पर्यटक राज्य के रूप में स्थापित करना।

---

*Corresponding Author: Email: sushmayadav2310@gmail.com
Mobile No. 09893415886

विधितंत्र तथा आँकड़ों के स्त्रोत

छत्तीसगढ़ में पर्यटन स्थलों के द्वितीयक आंकड़ो के आधार पर क्षेत्र में पर्यटन की प्रसम्भाव्यता का आकलन अधोलिखित सांख्यिकीय विधि से किया गया, यथा–

$$P(A)\ \frac{M}{N}$$

जहाँ–N=परस्पर एकमात्र एवं समान रूप से संभाव्य स्थिति

M="अ" क्षण में विशिष्ट स्थिति

छत्तीसगढ़ के वर्तमान पर्यटन स्थल

यद्यपि राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन मानचित्रों में छत्तीसगढ़ को विशिष्ट स्थान नहीं मिल पाया है, तथापि यहाँ पर ऐतिहासिक, पुरातात्विक, पौराणिक, धार्मिक वन्य जीवन अभ्यारण्य एवं प्राकृतिक सौदर्य के अद्वितीय उदाहरण एक साथ विद्यामान हैं। एशिया के नियाग्रा नाम से विख्यात चित्रकोट जलप्रपात, छत्तीसगढ़ का प्रयाग–राजीम, सरगुजा एवं बस्तर पठार के विशाल हरे–भरे घने वन एवं गुफायें पर्यटकों को आकर्षण के केन्द्र हैं। राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन के विकास के लिये 01 अक्टूबर 1966 को राष्ट्रीय पर्यटन विकास निगम की स्थापना की गई। 23 मई 1998 को पर्यटन विभाग को स्वतंत्र पर्यटन मंत्रालय का दर्जा दिया गया है। 12 जुलाई 2001 से राष्ट्रीय पर्यटन उद्योग के रूप में राजीम महोत्सव को सम्मिलित किया गया।

पर्यटन की महत्ता के आधार पर छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों का निम्नांकित वर्गीकरण किया जा सकता है:–

1. **धार्मिक स्थल–** राजिम, चम्पारण, डोंगरगढ़, दंतेवाड़ा, भोरमदेव, गिरौदपुरी, लुथरा शरीफ, नगपुरा, कुनकुरीचर्च।
2. **वन्य जीवन–** बारनवापारा सीतानदी उदयंती अभ्यारण्य, कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान, इन्द्रावती राष्ट्रीय उद्यान, अचानकमार अभ्यारण्य, बादलखोल अभ्यारण्य।
3. **जलाशय एवं प्रपात–** चित्रकोट जलप्रपात, चित्रधारा, चर्रेमर्रे जलप्रपात, गंगरेल बांध, सोंढूर, खुंटाघाट बाँध, मिनीमाता बाँध,
4. **पुरातात्विक–** आरंग, सिरपुर, बारसूर, शिवरीनारायण, पाल, सिंघनपुर गढ़घनोर, तालगांव,
5. **स्वास्थ्यवर्धक स्थल–** मैनपाट बगीचा, रामगढ़ की पहाड़ी, चिरमिरी।
6. छत्तीसगढ़ में पर्यटन की प्रसम्भाव्यता।

बिलासपुर तथा रायपुर के मैदानी क्षेत्रों में पर्यटन की प्रसम्भाव्यता उच्च (0.026 से 0.28) माना जा सकता है। इन क्षेत्रों में प्रमुख पर्यटन स्थल निम्नांकित हैं, यथा–

धार्मिक पर्यटन स्थल

(क) राजिम–रायपुर से 45 कि. मी. दूरी पर 8वीं–9वीं शताब्दी की पंचायन शैली में बना राजीव लोचन मंदिर प्राचीन शिल्प और वास्तुकला का अद्भुत नमूना है, राजिम में सोंढूर, पैरी और महानदी का संगम है।

(ख) चम्पारण:–रायपुर से 43 कि.मी. दूरी पर स्थित चम्पारण की ख्याति, महाप्रभु वल्लभाचार्य की जन्मस्थली और चम्पेश्वर महादेव मंदिर के कारण है।

(ग) डोंगरगढ़ः–हावड़ा–मुंबई रेलमार्ग पर रायपुर–नागपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर डोंगरगढ़ की पहाड़ी है, जहाँ पर 1600 फीट की ऊँचाई पर स्थापित शक्तिपीठ मां बम्लेश्वरी देवी का मंदिर समूचे छत्तीसगढ़ तथा सीमावती राज्य के श्रद्धालुओं के लिए आस्था का स्थल है।

(च) भोरमदेवः–कवधों से 18 कि.मी. की दूरी पर छपरी नामक गाँव के समीप चौरागाँव में भोरमदेव मंदिर है। यह मंदिर नागशैली के मंदिरों का सुन्दर उदाहरण है। भोरमदेव मंदिर के समीप ही दो प्राचीन मंदिर मंडवा महल और छेरकी महल स्थित हैं।

(छ) गिरौदपुरीः–यह सतनामी समाज का प्रमुख तीर्थ स्थल है, यहाँ प्रतिवर्ष फाल्गुन मास की पंचमी से सप्तमी तक मेला भरता है।

(ज) अन्य पर्यटन स्थलः–बिलासपुर क्षेत्र में लुथरा शरीफ मजार, दुर्ग क्षेत्र में नगपुरा जैन मंदिर गौण पर्यटन स्थल हैं।

वन्य जीव पर्यटन स्थल

(क) बारनवापाराः–रायपुर से 120 कि.मी. दूरी पर बारनवापारा अभ्यारण्य रायपूर जिला क्षेत्र में है। यह क्षेत्र सघन वन से आच्छादित है। अभ्यारण्य क्षेत्र मे 22 वनग्राम आते हैं।

जलाशय

(क) गगरेल बाँधः–रायपुर से लगभग 76 कि.मी.दूरी पर 1980 में निर्मित 32 टी.एम.सी क्षमता वाले गगरेल बाँध में 14 जलद्वार हैं। गगरेल बाँध पिकनिक स्पॉट के लिए प्रसिद्ध है।

(ख) खुंटाघाट जलाशयः–बिलासपूर–अबिकापूर मार्ग पर 25 कि.मी. की दूरी पर रतनपुर से मात्र 10 कि.मी. की दूरी पर खुंटाघाट स्थित है। यह स्थल चारों तरफ से घने वनों एवं पहाड़ों से घिरा हुआ है।

(ग) अन्य जलाशयः–माडम सिल्ली बाँध, सोंढूर जलाशय अन्य पर्यटन स्थल हैं।

पुरातात्विक महत्व के स्थल

(क) आरंगः–रायपुर से कि.मी. की दूरी पर स्थित आरंग के प्रसिद्ध मंदिर मांडूदेवल. बाघदेवल मंदिर एवं महामाया मंदिर हैं। कलचुरी शैली का 11–12 वीं शताब्दी में बना मांडदेवल मंदिर, छत्तीसगढ में अपनी शैली का एकमात्र मंदिर है। यह मंदिर खजुराहो के मंदिर के सदृश है।

(ख) सिरपुरः–रायपुर–संबलपुर मार्ग पर रायपुर से 83 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह सथल प्राचीन काल में श्रीपुर के नाम से विख्यात था। पाण्डुवंशीय शासकों के काल में दक्षिण कोसल की राजधानी होने का गौरव प्राप्त था। यहाँ स्थित लक्ष्मण मंदिर ईटों से निर्मित है। इस मंदिर का निर्माण 650 ई, के लगभग मान्य है।

(ग) शिवरीनारायणः–बिलासपुर से 65 कि.मी. और रायपुर से 165 कि.मी. की दूरी पर शिवरीनारायण कल्चुरीकालीन स्थापत्य कला का मंदिर है। यह स्थल मैकल पर्वत श्रृंखला के तलछटी में स्थित है। शिवरीनारायण को नारायण या पुरुशोत्तम क्षेत्र गुप्त प्रयाग विष्णुकांक्षी भी कहा जाता है। यह मान्यता है कि शबरी ने भगवान राम को इस स्थल पर जूठे बेर खिलाये थे।

(छ) पुरातात्विक महत्व के अन्य पर्यटन स्थलों में पाली (रतनपुर) तथा तालगांव (बिलासपुर) सम्मिलित हैं।

जगदलपुर, जशपुर, महेंद्रगढ़, भूपदेवपुर, सरगुजा तथा कंटगी पठारी क्षेत्रों में पर्यटन की प्रसम्भाव्यता निम्न से मध्यम (001 से 009) है। इस क्षेत्र में प्रमुख पर्यटन स्थल निम्नांकित हैं।

धार्मिक पर्यटन स्थल

दंतेवाड़ा में शंखिनी और डंकिनी नदियों के संगम पर 14वीं शताब्दी का दंतेश्वरी मंदिर माँ दुर्गा का एक रूप है। जनश्रुति के अनुसार सती के दाँत यहा गिरे थे।

वन्य जीव पर्यटन

(क) सीतानदी उदंती अभ्यारण्य—उदंती अभ्यारण्य रायपुर—देवभोग मार्ग पर उड़ीसा (ओडिशा) की सीमा पर उदंती नदी के किनारे स्थित है। उदंती नदी अभ्यारण्य के बीचों—बीच प्रवाहित होती है। पूरा अभ्यारण्य घने वनों से घिरा है। उदंती नदी सुन्दर जलप्रपात का निर्माण करती है।

(ख) कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान—कांगेर नदी के किनारे बसा कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान जगदलपुर से 33 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। विश्व प्रसिद्ध गुफायें, खूबसूरत झरने, जलप्रपात एवं पर्वतीय सौंदर्य पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। 28 कि.मी. लम्बाई में एशिया का प्रथम घोषित जीवमण्डल भी यहाँ स्थित है।

(ग) इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान—दन्तेवाड़ा जिले में स्थित यह राष्ट्रीय उद्यान मूलतः व्याघ्र परियोजना के उद्देश्य से बनाया गया है। यह उद्यान छत्तीसगढ़ के राज पशु वन भैंसे की शरण स्थली है।

(घ) अचानकमार अभ्यारण्य—अमरकंटक की घाटी पर बसा अचानकमार अभ्यारण्य बिलासपुर से 58 कि.मी. की दूरी पर बिलासपुर—पेण्ड्रा—अमरकंटक मार्ग पर स्थित है। यहाँ सालवन के जंगल और विभिन्न प्रकार के वन्य प्राणियों की बहुलता है।

(च) बादलखोल अभ्यारण्य—बगीचा से 15 कि.मी. की दूरी पर वन विभाग का बादलखोल अभ्यारण्य है। यहाँ शेर, तेंदुआ, हिरण और भालू जैसे वन्य प्राणी पाये जाते हैं।

जलप्रपात

(क) चित्रकोटः—जगदलपुर से 49 किलोमीटर की दूरी पर इन्द्रावती नदी पर यह जलप्रपात 21 मीटर ऊँचा है। यह जलप्रपात एशिया का नियाग्रा जलप्रपात के नाम में ख्यात है।

(ख) चित्रधाराः—बस्तर जिले के राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 16 पर 27 कि.मी. की दूरी पर मावली भाठा ग्राम में चित्रधारा प्रवाहित है। इसे महादेव घूमर प्रपात भी कहते हैं।

(ग) चर्रे—मर्रे जलप्रपातः—नारायणपुर के अंतागढ़—आमाबेड़ा वनमार्ग पर अंतागढ़ से 12 कि.मी. दूर पिंजारिन घाटी में इस झरने का उद्गम है।

पुरातात्विक महत्व के स्थल

(क) बारसूरः—यह स्थल जगदलपुर से 94 कि.मी. की दूरी पर बारसूर इंद्रावती नदी के तट पर बसा है। 11वीं शताब्दी में यहाँ कुल 147 बड़े मंदिर तथा 147 तालाब थे, जो बारसूर के चारों दिशाओं में 8—8 मील की दूरी तक बसाये गये थे। वर्तमान में 5—6 तालाब ही शेष रह गये हैं। यहाँ का गणेश मंदिर प्रसिद्ध है।

स्वास्थ्यवर्धक एवं दर्षनीय स्थल

(क) **मैनपाटः**–अम्बिकापुर से करीब 75 कि.मी. की दूरी पर तथा समुद्रतल से 1100 मीटर की ऊँचाई पर यह 28 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में आयताकार पहाड़ी पर बसा है। यह छत्तीसगढ़ के प्रमुख हिल स्टेशन के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ पर झरने और पर्वतीय सौंदर्य प्रमुख आकर्षण के केन्द्र हैं। टाईगर प्वाइंट, दरोगा प्वाइंट तथा दरहा, भूतहिया समेत अनेक जलप्रपात हैं। यहाँ तिब्बती शरणार्थी शिविर हैं।

(ख) **बगीचाः**–छत्तीसगढ़ के पूर्वोत्तर जशपुर जिले की बगीचा तहसील सैलानियों के लिये आकर्षण का मुख्य केन्द्र है। सर्दियों में शून्य डिग्री के आस–पास और गर्मियों में अधिकतम 30–35 अंश तापमान सैलानियों को लुभाता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय स्तर पर (1998) पर्यटन को विकास निगम का स्वतंत्र दर्जा दिया गया है भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये विदेशी पर्यटकों को आगम वीसा योजना प्रारंभ की गई है। वर्ष 2000–01 में विदेशी पर्यटकों की संख्या 26.7 लाख अनुमानित थी।

छत्तीसगढ़ में पर्यटन केन्द्रों की संख्या व महत्व को देखते हुए यहाँ पर्यटन उद्योग की प्रसंभाव्यता को नकारा नही जा सकता। छत्तीसगढ़ राज्य के अस्तित्व में आने के पश्चात् सर्वप्रथम 12 जुलाई 2001 को राष्ट्रीय परिपत्र में राजिम को सम्मिलित किया गया है। वर्तमान में पर्यटन उद्योग एक वृहद् उद्योग के रूप में देखा जा रहा है, जिसका उद्देश्य अधिक से अधिक आर्थिक विकास करना है।

पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए पर्यटन विकास एक्ट, 2000 (TDA) लागू किया गया है इससे राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन प्रोजेक्ट प्रोत्साहित होंगे।

राज्य का पठारी क्षेत्र यथा बस्तर पुरातात्विक संपदा की दृष्टि से धनी क्षेत्र है, विश्व धरोहर की सूची में सम्मिलित किया जा सकता है चित्रकोट, तीरथगढ़ जलप्रपात के अलावा विश्व प्रसिद्ध कुटुमसार गुफा है। विदेशी पर्यटक कोण्डागांव में टेराकोटा कला सीख रहे हैं। वेरियन एलविन तथा गिर्सन बस्तर की जनजातियों का अध्ययन कर चुके हैं।

भारत सरकार (2005–06) द्वारा कराये गये सर्वेक्षणों में राज्य के अन्य पर्यटन केन्द्रों की अपेक्षा बस्तर में विदेशी पर्यटकों की संख्या में कमी दर्ज की गई। बस्तर के पठारी क्षेत्रों में प्राकृतिक सौंदर्य एवं पुरातात्विक पर्यटन का 50 प्रतिशत भाग स्थित है। 50–60 विदेशी पर्यटक हर महीने अपनी व्यावसासिक यात्रा के साथ पर्यटन का आनंद लेते हैं।

केन्द्र सरकार ने राज्य के पर्यंटकों पर नक्सली डर समाप्त करने के लिये टूरिज्म पुलिसिंग की सिफारिश की है ।

आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार पर्यटन उद्योग के रास्ते में अवरोधक हैं। इस दिशा मे शासन को तत्काल सकारात्मक प्रकिया अपनानी चाहिये।

सदर्भ सूची

Mahmood, A., Raza, M., (1977), *Theory of Probability, Statistical Methods in Geographical Studies*, Rajesh Publication, New Delhi, 28.

श्रीवास्तव, वी.के. (1974), *प्रसम्भाव्यता, ऑकलन, भूगोल की सांख्यिकीय विधियाँ,* वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 234.

शर्मा, टी.डी., (2004–05), *छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल,* अरपा पाकेट बुक्स, द्वितीय संस्करण, बिलासपुर.

श्रीवास्तव, कमल, (2004), पर्यटन एव वास्तुकला, सौंदर्य, *शोध प्रकल्प,* 27(2), अप्रैल–जून.

सिंह, सलूजा, एच.पी., शर्मां देवदत्त, (2005), स्वाधीनता के पश्चात् छत्तीसगढ़ मे पर्यटन विकास और संभावनाएँ, *शोध प्रकल्प,* 30(1), जनवरी–मार्च, 24.

सिंह, वन्दना, (2008), छत्तीसगढ़ का प्रयाग राजिम, *उत्तर प्रदेश ज्योग्राफिकल जर्नल,* 13, 90.